© 2018 IJSRSET | Volume 4 | Issue 10 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
Themed Section : Engineering and Technology
DOI : https://doi.org/10.32628/IJSRSET196279

झूठा सच' में स्त्री पुरुष संबंधों की प्राकृतिक दुनिया

डॉ. नीलम

लक्ष्मीबाई कॉलेज, दिल्लीविश्विधालय दिल्ली

यशपालने अपने कथा साहित्य में जिस समस्या को सर्वाधिक ज्वलंत और गंभीर समस्या के रूप में देखा है वह स्त्री–पुरुष संबंध तथा नारी पराधीनता से संबंधित है।यशपालकी दृष्टि में स्त्री–पुरुष दोनों एक दूसरे पर आश्रित हैं। सामाजिक जीवन में दोनों को भूमिकाएं महत्वपूर्ण हैं और जीवन के विकास में दोनों का महत्व समान है, लेकिन फिर हमारे सामने प्रश्न उठता है कि जिस समाज को बनाने में नारी का विशेष योगदान है वह नारी इतनी पीड़ित, विवश, असहाय और अपमानित क्यों है ?वस्तुत: हमारा समाज पुरुष शासित है और पुरुष नारी को केवल दासी के रूप में ही देखना चाहते हैं । वे उन पर अपने अधिकार का दावा करके अपनेअहम्की तुष्टि करते हैं। जैसे झूठा – सच में जब कनक पुरी से लखनऊ साथ चलने के लिए कहती है तो– बौखला उठा। उसके पुरुष – के संस्कारों के अनुसार कनक आत्मसमर्पण कर चुकी थी तो उसे पति केमतका विरोध करने का अधिकार भी न रहा था । बोल उठा –'तुम क्या समझती हो उससे फ्लेटरेशन (उसकाबहलाव) कर के मुझे नौकरी दिला दोगी? ऐसी नौकरी पर मैं लात मरता हूं।आर्थिक हीनता पुरी के व्यक्तित्व को छोटा बनाती है जिसके ऊपर वह आवरण डाल कर अनावश्यक स्वाभिमान करने लगता है। वह अपने को ऊँची स्थिति में दिखाना चाहता है।

एक बार जब कनक और पुरी रिक्शे सेरेस्टोरंट जाते हैं तब जब कनक पैसा देती है तो पुरी मना करता है कि पैसे वह देगा जबकि उस समय उसके पास पैसे नहीं थे और वह बहाना मारता है किबटुआघर भूल आया। पुरुष का अहम् यह कभी नहीं चाहेगा कि उसके रहते स्त्री पैसा दे। ये छोटी –छोटोबाते हमें आम लोगों के जीवन में भी देखने को मिल जाती है और पुरुष समझते हैं कि वे स्त्री के आगे छोटे होजाएँगे। यह परंपरावादी दृष्टिकोण है जोहमें आज भी देखने को मिलता है। यह परंपरावादी दृष्टिकोण हमें पुरी के मुहल्ले में भी देखने को मिलता है। "पुरी के माँ बाप चाहते थे कि तारा की पढ़ाई रोक दीजाय। जब लड़का हीबी. ए. पास नहीं तोपड़कीको करके क्या करेगी।"[2] ऐसे कई उदाहरण हमें और देखने –को मिलते है जिसमें से एक उदाहरण दृष्टव्य है जब तारा शादी होने के बाद ससुराल जाती है तो उसका पति सोमनाथ उसके साथ अभद्र व्यवहार करता है। " उसने तारा को चोटी से पकड़ कर पलंग के नीचे गिरा दिया। दो बातें मार कर दाँत पीसते हुए गाली दी। भूखे मास्टर की औलाद तेरी यह हिम्मत कि मुझसे शादी के लिए मिजाज दिखाये !–––बी. ए. पढ़ने का बहुत घमंड़ है? तारा का उसके सम्मुख पूर्ण आत्म समर्पण न कर देना ही उसका घोर अपमान था।"[3] पुरुष का अहं स्त्री को बराबर स्वीकार नहीं करता है। वह सोचता है कि स्त्री हमेशा उससे दबकर रहे। वह उससे आगे न निकल पायें और उसका वर्चस्व उस पर कायम रहे।यशपालइसे फूहड़ ढंग से प्रकट नहीं करते हैं बल्कि सुक्ष्म तरीके से इसे अभिव्यक्त करते हैं । नारी पराधीनता का एक कारण यह भी है कि वह आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र नहीं है, जीवन के जीतने भी साधन हैं,उन पर पुरुष वर्ग का अधिकार है। दूसरा कारण हमारी सामाजिक मान्यताओं और परंपरागत आदर्शों से संबंधित है। नारी सदियों से शोषित रही है। अत: आज भी पुरुष वर्ग उसे शोषित ही रखना चाहता है। नारी को स्वतंत्रता और समानाधिकार उसे इसलिए भी स्वीकार नहीं है क्योंकि वह सोचता है कि इससे उसका प्रभुत्व समाप्त हो जायेगा । पुरुषों की जो एकाधिकार की भावना है वही नारी की स्वतंत्रता में सबसे बड़ी बाधक है । पुरुष का अहम यह कभी नहीं स्वीकार करेगा कि नारी उससे आगे निकले। इसी पुरुष अहं के कारण कनक और पुरी का संबंध विच्छेद हो जाता है। पुरुष जमीन के टुकड़े की तरह स्त्री पर अपना अधिकार जमाना चाहते हैं, वे

Received : 02 Sep 2018 | Accepted : 25 Sep 2018 | September-October-2018 [4 (10) : 427-430]

सोचते हैं कि स्त्री उन की जागीर है। नारी की इच्छाओं तथा उसके आत्म-सम्मान को कुचलने वाले पुरुष के अहंकार को यशपाल एक सामाजिक अपराध मानते हैं। नारी के प्रति पुरुष का जो दृष्टिकोण है । वह पूरी तरह से परंपरावादी और संस्कारों में जकड़ी हुई है । लेकिन झूठा सच में तारा, कनक और मर्सी जैसी स्त्रियां इस परंपरावादी दृष्टिकोण को तोड़ती हुई आगे निकलती हैं। ये पुरुष के आगे घुटने नहीं टेकती और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनती हैं। ऐसी ही रिस्त्रयाँ यशपाल के आदर्श की प्रतिमा है।यशपाल का मानना है कि समाज के पूर्ण विकास के लिए सामाज के आधे भाग में स्त्री का सहयोग आवश्यक है स्त्री की आर्थिक स्वतंत्रता स्त्री का मानवीय अधिकार है । आर्थिक स्वतंत्रता के बिना स्वतंत्रता का कुछ अर्थ नहीं, वह ढोंग मात्र है। पूंजीवादी मनोवृत्ति स्त्री की आर्थिक स्वतंत्रता का विरोध करके स्त्री को अपनी माँग की वस्तु बनाए रखना चाहती है।''[4]

यशपालकी दृष्टि में स्त्री-पुरुष के मध्य या प्रेम सहज, स्वाभाविक तथा प्राकृतिक होता है, जिसमें परस्पर आत्मसंतोष और उचित आश्रय की भावना निहित होती है। प्रकृति जन्यआकर्षण अथवा प्रेम में को सामाजिक नैतिक बंधनों में कैसे बांधा जा सकता है। प्रेम किसी भी सामाजिक नैतिक धर्म को स्वीकार्य करने के लिए बाध्य नहीं हो सकता है। और यदि बाध्य कियाजायतो वह जीवन को कुंठित बना देता है,यशपालने प्रेम को भी मार्क्सवादी दृष्टि से विश्लेषित किया है। उसके स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए वे कहते हैं' सब चीजों की तरह जीवन में प्रेम की गति भीदूंदात्मकहै। प्रेम जीवन की सफलता और सहायता के लिए है" 5 इस कथन से स्पष्ट है कि यशपाल प्रेम को जीवन के सहायक तत्व होने के कारण प्रेम के लिए अपने सहज और स्वाभाविक रूप में गतिशील होना आवश्यक है यदि प्रेम को यह भूमिका नहीं मिलती तो प्रेम जीवन के स्वस्थ विकास में सहायक नहीं बाधक सिद्ध होता है। यशपालके कथा-साहित्य में प्रेम के दोनों रूप प्रकट हुए हैं। एक ओर जहाँ प्रेम अपनो स्वाभाविक भूमिका में गतिशील होता हुआ जीवन में आत्मसंतोष की बस्तु बनता है, दूसरी ओर ऐसे भी प्रेम-प्रसंग है जो एक स्थिति में पहुँच कर असंतुलित हो जाते हैं और जीवन में कटुता आ जाती है। जैसे कनक औरजयदेवका प्रेम यह एक स्थिति पर पहुंच कर असंतुलित हो जाता है और फिर टूट कर बिखर जाता है।

पूंजीवाद के अन्तर्गत जहाँ नारी व्यवस्था के अन्य क्षेत्रों में शोषित है, वहाँ उसके लिए अपनी व्यक्तिगत रुचि और इच्छानुसार प्रेम करना भी एक कठिन समस्या है। यशपाल की दृष्टि में इसका एक मुख्य कारण नारी का आत्मनिर्भर न होना है।मर्सीआदि नारियों से कारण ही अपने प्रेम को सार्थक रूप प्रदान करती हैं । जो नारियाँ आत्मनिर्भर नहीं हैं देश प्रदान करतो कुंठा ग्रस्तवो जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य होती हैं। जैसे उर्मिला,शीलो आदि नारियां इस भूमिका से संबंधित अंत में ऊर्मिला डा.मुगिया से प्रेम और विवाह करने में समर्थ हो जाती है। नारी समस्या का एक ओरपहलुआज की विवाह पद्धति पर आधारित है। यशपाल परंपरागत विवाह पद्धति को स्वीकार नही करते है यशपाल की दृष्टि में एक ही पुरुष के साथ नारी का जीवन भर के लिए बंध जाना नारी की स्वतंत्रता नही उसकी दासता ही की जाएगी वास्तव में देखा जाए तोयशपालविवाह के विरोधीनहीहै वे उन परंपरागत सामाजिक धारणाओं एवम मान्यताओं के विरोधी अवश्य है जो नारी को एक मात्रप्रशकी चाहे वह अनिच्छा ही पूर्वक क्यों न रहे दासी बनकर रहने के लिए मजबूर करती हैं। इस संदर्भ में उनका विरोध मूलत: नारी के पति व्रत धर्म के बंधन के प्रति हैयशपालकी दृष्टि में यह पुरुष वर्ग का अहंकार है। पुरुष कई स्त्रियों के साथ सम्बंध बनाने के लिए स्वतंत्र हैं । किंतु बांतोजो भारत विभाजन के समय बिछड़ जाने के कारण पति द्वारा अपवित्र मान ली जाती है और वह घर के दरवाजे पर सिर पटक कर अपने प्राण दे देती है। यहपुरुषवादीशोषण को व्यक्त करता है लेकिन इसके अतिरिक्त ऐसी नारियां भी है जो विवाह के इस परंपरावादी आदर्श का शिकार नहीं बनती और अपने जीवन को अभिशप्त कुंठित और समाप्त होने से बचा लेती है जैसे तारा पति के अत्याचार से पीड़ित होकर विवाह की पहली ही रात को भाग जाती है और आत्मनिर्भर बनकर डॉक्टर प्राणनाथ से विवाह करती है कनक भीजयदेवको छोड़कर दिल को अपना आती है यें नारियां यशपाल की विचार धारा का ही प्रतिनिधित्व करते हैं।

हमारे समाज में पुरुष का विवाहित होना इतना आवश्यक नहीं माना जाता जितना स्त्री का। पुरुष का विवाह यदि ने भी हो तो तब भी कोई विशेष बात नहीं समझी जाती लेकिन स्त्री का विवाह ने होने पर समाज उसकी और उंगली उठने लगता है हमारा समाज पुरुषों केस्वैच्छित ब्रह्मचर्य का तो सम्मान करता है लेकिन उसने कभी स्त्री को ब्रह्मचारिणी के रूप में देखना नहीं चाहा

। यदियशपालके सेक्स विषयक मान्यताओं पर विचार करें तों उनकी यह मान्यताएं परंपरागत वर्जनामूलक दृष्टि के प्रति तीव्र विद्रोह का ऐलान करती है। यशपालकी दृष्टि मेंये कोई पाप या धर्म नहीं है । काम भावना उनकी दृष्टि में प्राकृतिक भूख प्यास की तरह है जिसकी पूर्ति अनिवार्य है । परंपरागत भारतीय धारणायौन पवित्रता को विशेष महत्व देती है । यही कारण है कि उसमें काम स्वतंत्रता के स्थान पर अनुशासन और संयम का आग्रह अधिक है । जहां तक नारी पुरुष के जीवन में काम के महत्व काप्रश्नहैं, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि स्वस्थ जीवन के विकास क्रम में काम को स्वाभाविक इच्छा की पूर्ति भी आवश्यक है। झूठा सच की सिलो और रतन के बीच चलने वाला प्रेम संबंध इसका एक उदाहरण है। पूर्ण विरम शिला विवाह के पश्चात भी रतन और अपनेपति केबीच बराबर संबंध बनाए रखती है। इस प्रकार यशपाल का विवाहित संबंध वादी पाश्चात्य दृष्टिकोण उभर कर सामने आते हैं । विवाहित संबंध सही है या नहीं यशपाल कहते हैं कि यह अनुचित नहीं है प्रेम पर आधारित हो।

कौन सा स्त्री पुरुष संबंध नैतिक है। अग्नि के सामने फेरे ले लेने से यह पवित्र नहीं बनता प्रेम ही इसे पवित्र बनता है अगर यह शिव चर्चा से अनुभूति से किया गया है तो यह पवित्र संबंध है परस्पर स्वतंत्रता से किया गया यौन संबंध पवित्र होता है। विवाहित स्त्री–पुरुष का यौन संबंध भी पवित्र नहीं अनैतिक है अगर वह स्वेच्छा से नहीं हुआ है इस प्रकार यशपालका दर्शन स्त्री पुरुष के बारे में बहुत ज्यादा ऐसे स्वीकार्य नहीं है यह प्रेम और विवाह को अन्य दृष्टिकोण से रखने की एक दृष्टि है जो कि आज हमारे समाज का व्यापक सच बनते जा रही हैसिलो के प्रेम का यह दिन उसे किसी एक और बढ़ने नहीं देता ना तो वह पूर्ण रूप से अपने पति के प्रति समर्पित है और नहीं अपने प्रेमी रतन के। या दिन दो उसके जीवन का एक अहम पहलू है इस परिप्रेक्ष्य में वह दोनों रिश्तो को अलग–अलग महत्व देते हुए किसी एक को छोड़ना नहीं चाहती, चाहे उसे समाज स्वीकार करें या ना करें । इस बारे में उसके विचार व्यापक सामाजिक मूल्यों को चुनौती देते हुए उभर कर सामने आते हैं जो यशपाल के वैचारिक धरातल का एक पहलूहै जिस समाज में स्त्री पुरुष को अगर स्वतंत्रता पूर्वक यौन संबंध बनाने दिया जाए वह दोहरी संबंध जीने के लिए क्यों मजबूर हो। इस समाज को संस्कृत के कारण नहीं हुए अनैतिक संबंध के बनाने के लिए जिम्मेदार है वह प्रेम संबंध को रखना नैतिक मानते हुए मानते हैं कि विवाह प्रेम पर ही होना चाहिए सिलो रतन और मोहन के जारी हुए इसे दिखाते हैंयशपालकहते हैं कि जब प्रेम खत्म हो जाए तो ऐसे विवाहित संबंध को तोड़ देना चाहिए जब स्त्री पुरुष के अंदर से प्रेम निकल जाए तो वह शव है उसे दफा दफना देना चाहिए यशपाल के इस द्वंदात्मक प्रेम की जटिल स्थिति को उभारते हुए डॉक्टर रामविलास शर्मा का मानना है कि"यशपाल के लिए सेक्स की तरफ मार्क्सवाली दृष्टिकोण क्या है यह खुद मार्क्सवादियों के अमल को उन्होंने दिखाया है इस तरह का साहित्य जनता की सेवा की तरह करता है और हमारी चाहते संस्कृति को इस तरह आगे विकसित करता है यह बात समझ में नहीं आती । अत: इस प्रकार निष्कर्ष निकलता है कि यशपाल के साहित्य में स्त्री पुरुष के बीच जो संबंध दिखाई पड़ता है वह 1947 के आसपास भारतीय जनमानस के विकसित होने वाले उच्च शिक्षा परमध्यवर्गीय है जीवन के पास सत्य प्रभाव भी शुभ विवाह से युक्त स्त्री पुरुष संबंध था जो ना तो पूरी तरह से रूढ़िवादी संस्कारों के बोझ को धोने वाली नई पुरुषों के बीच चलने वाले शोषणवादी कहानी थी और नहीं एकदम से पुराने संस्कारों को झटक कर चल देने वाली स्वतंत्र और अधिकार संपन्न स्त्री के प्रेम का प्रवाह था बल्कि यह आज के युवा वर्ण का यथार्थ प्रेम संबंध था जो नारी को भी अपनी ही तरह स्वतंत्र करने के पक्ष में था। यशपालको अपने इस स्त्री पुरुष संबंध की दृष्टि के कारण जो सामाजिक विरोध दिखाई देता है उसको अभिव्यक्त करने वाले कुछ पात्रों की भी सृष्टि उन्होंने अपने कथा साहित्य में की।

निस्संदेह स्त्री– पुरुष संबंधों का चित्रण और विश्लेषण जिस तरह यशपाल करते हैं वह बहुत वैज्ञानिक और यथार्थवादी है । दूसरा यशपाल के इन चित्रणों में संतुलन और परिपक्वता दिखती है जिसके कारण ये प्राकृतिक लगते हैं । इस संबंध में कहा जा सकता है कि यशपाल मानवीय संबंधों के निपुण कथाकार हैं जो साहित्य लेखन में अति यथार्थवादी दृष्टिकोण निर्वहन करते हैं ।

संदर्भ ग्रंथ

1. झूठा सच वतन और देश पहला यशपालपृष्ठ 185
2. वतन और देश पृष्ठ–34
3. झूठा सच वतन और देश पृष्ठ – 170
4.. बात–बात में बात, पूंजी वाद कीभोग्यमहिला पृष्ठ 27
5..यशपालका कथा साहित्य पृष्ठ–182 समग्र अनुशीलन
6.. प्रगतिशील साहित्य की समस्याएं पृष्ठ–124